ग़ीबत की तबाह कारियां क़िस्त नम्बर 5

Muaaf Farmaaiye Sawab Kamaaiye (Hindi)

मुआ़फ़ फ़रमाइये सवाब कमाइये

कुल सफ़हात 24

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ؕ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ अल्लाह पाक ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُستطرَف، ١/٤٠)

(अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

त़ालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नाम किताब : **मुआ़फ़ फ़रमाइये सवाब कमाइये**

सिने त़बाअ़त : रमज़ान **1441** सि.हि.

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना

इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

मुआफ़ फ़रमाइये सवाब कमाइये

येह रिसाला **(मुआफ़ फ़रमाइये सवाब कमाइये)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की
मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611
Email : hindibook@dawateislamihind.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

येह मज़्मून "ग़ीबत की तबाह कारियां" के सफ़ह़ा 108 ता 125 से लिया गया है।

मुआफ़ फ़रमाइये सवाब कमाइये

या **अल्लाह** पाक! जो कोई रिसाला "**मुआफ़ फ़रमाइये सवाब कमाइये**" के 22 सफ़ह़ात पढ़ या सुन ले उस के तमाम छोटे बड़े गुनाह मुआफ़ फ़रमा दे। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : बेशक बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जो मुझ पर सब से ज़ियादा दुरूद भेजे। (ترمذی ج۲ص۲۷ حدیث ٤٨٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ह़क़ीक़ी मुफ़्लिस : पैकरे अन्वार, तमाम नबियों के सरदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या तुम जानते हो **मुफ़्लिस** कौन है? **सह़ाबए** किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : हम में **मुफ़्लिस** (या'नी ग़रीब मिस्कीन) वोह है जिस के पास न दिरहम हों और न ही कोई माल। तो **फ़रमाया :** मेरी उम्मत में **मुफ़्लिस** वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात ले कर आएगा लेकिन उस ने फ़ुलां को गाली दी होगी, फ़ुलां पर **तोहमत** लगाई होगी, फ़ुलां का माल खाया होगा, फ़ुलां का ख़ून बहाया होगा और फ़ुलां को

www.dawateislami.net

मारा होगा। पस उस की नेकियों में से उन सब को उन का हिस्सा दे दिया जाएगा। अगर उस के ज़िम्मे आने वाले हुक़ूक़ के पूरा होने से पहले उस की नेकियां ख़त्म हो गईं तो लोगों के गुनाह उस पर डाल दिये जाएंगे, फिर उसे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। (صحیح مُسلِم ص ۱۳۹٤ حدیث ۲۵۸۱)

आह ! क़ियामत के रोज़ क्या होगा !! : ऐ आ़शिक़ाने रसूल !

डर जाओ ! लरज़ उठो ! ह़क़ीक़त में **मुफ़्लिस** वोह है जो नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात व सदक़ात, सख़ावतों, फ़लाही कामों और बड़ी बड़ी नेकियों के बा वुजूद क़ियामत में ख़ाली का ख़ाली रह जाए ! कभी गाली दे कर, कभी तोहमत लगा कर, बिला इजाज़ते शर्ई डांट कर, बे इ़ज़्ज़ती कर के, ज़लील कर के, मारपीट कर के, आ़रियतन (या'नी आ़रिज़ी तौ़र पर) ली हुई चीज़ें क़स्दन न लौटा कर, क़र्ज़ दबा कर और दिल दुखा कर जिन को दुन्या में नाराज़ कर दिया होगा वोह उस की सारी नेकियां ले जाएंगे और नेकियां ख़त्म हो जाने की सूरत में उन के गुनाहों का बोझ उस पर डाल कर वासिले जहन्नम कर दिया जाएगा। लिहाज़ा अगर किसी की **ग़ीबत** कर ली है और उस को पता चल गया है या किसी त़रह़ की भी ह़क़ तलफ़ी की है तो तौबा के साथ साथ दुन्या ही में जिस की ह़क़ तलफ़ी की है उस से बिग़ैर शरमाए मुआ़फ़ी तलाफ़ी कर लेने में आ़फ़िय्यत है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 24 **सफ़ह़ा** 463 पर फ़रमाते हैं : यहां (दुन्या में) मुआ़फ़ करा लेना सह्ल (या'नी आसान) है, क़ियामत के दिन इस की उम्मीद मुश्किल कि वहां हर शख़्स अपने अपने ह़ाल में गिरिफ़्तार, नेकियों का त़लब गार (और) बुराइयों से बेज़ार होगा। पराई

www.dawateislami.net

नेकियां अपने हाथ आते अपनी बुराइयां उस (या'नी दूसरे) के सर जाते किसे बुरी मा'लूम होती हैं ! यहां तक कि **ह़दीस** में आया है कि मां बाप का बेटे पर कुछ दैन (हुक़ूक़ का मुत़ालबा) आता होगा उसे रोज़े क़ियामत पीटेंगे कि हमारा दैन (ह़क़) दे ! वोह कहेगा : मैं तुम्हारा बच्चा हूं, या'नी शायद रह़म करें, वोह (या'नी वालिदैन) तमन्ना करेंगे काश ! और ज़ियादा (ह़क़) होता (ताकि बेटे से नेकियां ले कर या अपने गुनाह उस के सर डाल कर अपनी ख़लासी करवाएं ।) **त़बरानी** में इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है, उन्हों ने कहा कि मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे थे कि वालिदैन का बेटे पर दैन होगा क़ियामत के रोज़ वालिदैन बेटे पर लपकेंगे तो बेटा कहेगा : मैं तुम्हारा बेटा हूं तो वालिदैन को ह़क़ दिलाया जाएगा और वोह तमन्ना करेंगे काश ! हमारा ह़क़ और ज़ाइद होता[1]। जब मां बाप का येह ह़ाल तो औरों से उम्मीद ख़ाम ख़याल (या'नी फ़ुज़ूल ख़याल), हां **करीम व रह़ीम मालिको मौला جَلَّ جَلَالُهٗ وَ تَبَارَکَ وَ تَعَالٰی** जिस पर रह़म फ़रमाना चाहेगा तो यूं करेगा कि ह़क़ वाले को बे बहा क़ुसूरे जन्नत (या'नी जन्नत के आ़लीशान मह़ल्लात) मुआ़वज़े में अ़त़ा फ़रमा कर अ़फ़्वे ह़क़ (या'नी ह़क़ मुआ़फ़ करने) पर राज़ी कर देगा। एक करिश्मए करम में दोनों का भला होगा ! न इस की ह़सनात (या'नी नेकियां) उसे दी गईं न उस की सय्यिआत (या'नी बदियां) इस के सर रखी गईं न उस का ह़क़ ज़ाएअ़ होने पाया बल्कि ह़क़ से हज़ारों दरजे बेहतर अफ़्ज़ल पाया, रह़मते ह़क़ की बन्दा नवाज़ी (भी ख़ूब कि) ज़ालिम नाजी (या'नी नजात पाए और) मज़्लूम राज़ी (हो जाए),

[1] اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر لِلطَّبَرانی ج۱۰ص۲۱۹حدیث۱۰۵۲۶

www.dawateislami.net

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ كَمَا يُحِبُّ رَبُّنَا وَ يَرْضٰى (पस **अल्लाह** पाक ही के लिये है ऐसी ह़म्दो सना जो बहुत ज़ियादा, पाकीज़ा और बा बरकत है जैसा कि हमारे रब की पसन्द और रिज़ा है)

या इलाही ! जब पड़े महशर में शोरे दारोगीर[1]

अम्न देने वाले प्यारे पेश्वा का साथ हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 132)

मैं ने अपनी इ़ज़्ज़त लोगों पर सदक़ा की : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ग़ीबत एक ऐसी आफ़त है कि इस से बहुत ही कम मुसल्मान महफ़ूज़ होंगे, हमें **ग़ीबत** और दीगर गुनाहों से बचने और दूसरों को बचाने की भरपूर सई करनी चाहिये। **ग़ीबत** का एक सबब ज़ाती बुग़्ज़ो अ़दावत और नफ़रत भी है जिस का इलाज अ़फ़्व या'नी मुआ़फ़ करना है, इस को यूं समझिये कि आप की इ़ज़्ज़त या जान या माल को किसी ने नुक़्सान पहुंचाया हो जिस की वज्ह से उस की नफ़रत आप के दिल में बैठ गई हो और आप हर जगह हर मौक़अ़ पर उस की **ग़ीबत** करते फिरते हों, यक़ीनन इस त़र्ज़े अ़मल से आप को मुसल्सल आख़िरत का नुक़्सान होता रहेगा। तो आ़फ़िय्यत इसी में है कि नाराज़ी बाक़ी रखने के बजाए मुआ़फ़ करने की आ़दत बनाई जाए ताकि रन्जिशें और ना इत्तिफ़ाक़ियां परवान ही न चढ़ सकें سُبْحٰنَ اللّٰه ! बल्कि बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم से तो येह भी साबित है कि वोह पेशगी ही अपने हुक़ूक़ मुआ़फ़ कर दिया करते थे। चुनान्चे इस की तरग़ीब दिलाते हुए **अल्लाह** पाक के आख़िरी रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कसरत के साथ येह इर्शाद फ़रमाते : क्या तुम में से

1. शोरे दारोगीर या'नी पकड़ धकड़ का शोर

www.dawateislami.net

कोई एक इस बात से आ़जिज़ है कि वोह **अबू ज़मज़म** की त़रह़ हो। उन्हों ने अ़र्ज़ की : **अबू ज़मज़म** कौन है ? इर्शाद फ़रमाया : पहले लोगों (या'नी पिछली उम्मत) में एक शख़्स था, वोह सुब्ह़ के वक़्त यूं कहता : या **अल्लाह** पाक ! मैं ने आज के दिन अपनी इ़ज़्ज़त को उस आदमी पर सदक़ा कर दिया जो मुझ पर ज़ुल्म करे। (شُعَبُ الْاِیمان ج٦ص٢٦١حدیث٨٠٨٢)

पेशगी मुआफ़ करने वाले की मग़्फ़िरत हो गई : एक मुसल्मान ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी में अ़र्ज़ की : या **अल्लाह** पाक ! मेरे पास माल नहीं कि मैं सदक़ा करूं तो जो शख़्स मेरी **इ़ज़्ज़त** के दरपै हो तो येह मेरी त़रफ़ से उस पर **सदक़ा** है। **अल्लाह** पाक ने **नबी** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ वह्य भेजी कि मैं ने इस शख़्स को **बख़्श** दिया। (اِحیاءُ الْعُلوم ج ٣ ص ٢١٩)

इमामे मज़्लूम की अपनी इ़ज़्ज़त के मुतअ़ल्लिक़ सख़ावत : इमामे मज़्लूम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जब अपने घर से निकलते तो कहते : ऐ **अल्लाह** पाक ! मैं आज **सदक़ा** करूंगा और वोह येह कि आज जो मेरी **ग़ीबत** करे उस को मैं ने अपनी **इ़ज़्ज़त** दे दी। (حیاةُ الحیوانِ الکُبری ج١ص٢٠٢)

ऐ आ़शिकाने सह़ाबा व अहले बैत ! शहज़ादए आ़ली वक़ार सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इर्शादे गिरामी के मा'ना येह हैं कि आज के रोज़ मेरी **ग़ीबत** करने वाले से दुन्या व आख़िरत में बदला नहीं लूंगा। इस से मुराद हरगिज़ येह नहीं कि **ग़ीबत** करना जाइज़ हो गया। **ग़ीबत** ब दस्तूर गुनाह ही रहेगी और इस की तौबा भी वाजिब होगी, नीज़ कोई येह न समझे कि जिस ने नफ़्रत व अ़दावत और बुग़्ज़ो

www.dawateislami.net

कीने से बचने के लिये पेशगी हुक़ूक़ मुआ़फ़ कर दिये हों उस के हुक़ूक़ तलफ़ करना जाइज़ हो जाता है ! याद रहे कि पेशगी मुआ़फ़ी बिला शुबा एक मुस्तहसन (या'नी पसन्दीदा) अ़मल है लेकिन इस के बा वुजूद साहिबे मुआ़मला या'नी जो कि अपने हुक़ूक़ पेशगी मुआ़फ़ कर चुका है उस को ह़क़ तलफ़ होने पर मुत़ालबे का ह़क़ बाक़ी रहता है। हां जो हुक़ूक़ ज़मानए साबिक़ा (या'नी गुज़रे हुए दिनों) में तलफ़ किये जा चुके हों उस को मुआ़फ़ कर देंगे तो ह़क़्क़ुल इ़बाद (या'नी बन्दे के हुक़ूक़) मुआ़फ़ हो जाएंगे अलबत्ता अब भी **हुक़ूक़ुल्लाह** (या'नी **अल्लाह** पाक के हुक़ूक़) ज़िम्मे बाक़ी रहेंगे और उन के लिये तौबा ज़रूरी होगी बहर ह़ाल हमें चाहिये कि अफ़्वो दर गुज़र को इख़्तियार करें और न सिर्फ़ पेशगी मुआ़फ़ी का ज़ेह्न बनाएं बल्कि अब तक जिन लोगों ने हमारे हुक़ूक़ तलफ़ किये उन्हें भी रिज़ाए इलाही के लिये मुआ़फ़ कर दें। मुआ़फ़ करने के फ़ज़ाइल की भी क्या बात है इस ज़िम्न में दो रिवायात मुलाह़ज़ा हों चुनान्चे

(1) मुआ़फ़ करने की अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ीलत : फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "क़ियामत के रोज़ ए'लान किया जाएगा जिस का अज्र **अल्लाह** पाक के ज़िम्मए करम पर है, वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए। पूछा जाएगा : किस के लिये अज्र है ? वोह मुनादी (या'नी ए'लान करने वाला) कहेगा : "**उन लोगों के लिये जो मुआ़फ़ करने वाले हैं।**" तो हज़ारों आदमी खड़े होंगे और **बिला ह़िसाब जन्नत** में दाख़िल हो जाएंगे।"

(معجم اوسط ج۱ص۵۴۲حدیث۱۹۹۸مختصراً)

(2) जन्नत पाने के तीन नुस्ख़े : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन बातें जिस शख़्स में होंगी **अल्लाह** पाक (क़ियामत के दिन) उस का ह़िसाब

www.dawateislami.net

बहुत आसान त़रीक़े से लेगा और उस को (अपनी रह़मत से) **जन्नत** में दाख़िल फ़रमाएगा। मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह कौन सी बातें हैं ? फ़रमाया : ﴿1﴾ जो तुम से क़त़्अ़ तअ़ल्लुक़ करे (या'नी तअ़ल्लुक़ तोड़े) तुम उस से मिलाप करो ﴿2﴾ जो तुम्हें मह़रूम करे तुम उसे अ़त़ा करो और ﴿3﴾ जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम उस को मुआ़फ़ कर दो।

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج ۱ ص ۲۶۳ حدیث ۹۰۹)

ह़ज़रते मौलाना रूम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

تو برائے وَصل کردَن آمدی　　نے برائے فَصل کردَن آمدی

(या'नी तू जोड़ पैदा करने के लिये आया है तोड़ पैदा करने के लिये नहीं आया)

(مثنوی ج اوّل دفتر دوم ص ۱۷۳)

मदनी वसिय्यतें : اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ ने रिज़ाए इलाही पाने की निय्यत से अपने क़र्ज़दारों को पिछले क़र्ज़ों, माल चुराने वालों को चोरियों, हर एक को **ग़ीबतों,** तोह्मतों, तज़्लीलों, ज़र्बों समेत तमाम जानी माली हुक़ूक़ मुआ़फ़ किये और आयिन्दा के लिये भी तमाम तर हुक़ूक़ पेशगी ही मुआ़फ़ कर दिये हैं चुनान्चे **आ़शिकाने रसूल** की मदनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मक्तबतुल मदीना के रिसाले **''मदनी वसिय्यत नामा''** (16 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 9 पर इ़ज़्ज़तो आबरू और जान के मुतअ़ल्लिक़ है : मुझे जो कोई गाली दे, बुरा भला कहे (ग़ीबतें करे), ज़ख़्मी कर दे या किसी त़रह़ भी दिल आज़ारी का सबब बने मैं उसे **अल्लाह** पाक के लिये पेशगी मुआ़फ़ कर चुका हूं, मुझे सताने वालों से कोई इन्तिक़ाम न ले। बिलफ़र्ज़ कोई मुझे शहीद कर दे तो मेरी त़रफ़ से उसे मेरे हुक़ूक़ मुआ़फ़ हैं। वुरसा से भी दरख़्वास्त है कि उसे अपना ह़क़

www.dawateislami.net

मुआफ़ कर दें (और मुक़द्दमा वग़ैरा दाइर न करें)। अगर सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त के सदक़े महशर में ख़ुसूसी करम हो गया तो اِنْ شَآءَاللّٰه अपने क़ातिल या'नी मुझे शहादत का जाम पिलाने वाले को भी जन्नत में लेता जाऊंगा बशर्ते कि उस का ख़ातिमा ईमान पर हुवा हो। (अगर मेरी शहादत अ़मल में आए तो इस की वज्ह से किसी क़िस्म के हंगामे और हड़तालें न की जाएं। अगर "हड़ताल" इस का नाम है कि लोगों का कारोबार ज़बर दस्ती बन्द करवाया जाए। नीज़ दुकानों और गाड़ियों पर पथराव वग़ैरा हो। तो बन्दों की ऐसी हक़ तलफ़ियों को कोई भी मुफ़्तिये इस्लाम जाइज़ नहीं कह सकता। इस त़रह़ की हड़ताल ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

ज़रूरी वज़ाह़त : क़त्ले मुस्लिम में शर्अ़न तीन हुक़ूक़ हैं : **(1)** ह़क़्क़ुल्लाह **(2)** ह़क़्क़े मक़्तूल **(3)** ह़क़्क़े वुरसा। मक़्तूल ने अगर ज़िन्दगी में पेशगी मुआफ़ कर दिया हो तो येह सिर्फ़ उसी की तरफ़ से वा'दा है ह़क़ीक़तन मुआफ़ नहीं होगा, **ह़क़्क़ुल्लाह** से ख़लासी के लिये सच्ची तौबा करे, **ह़क़्क़े वुरसा** का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ वारिसों से है वोह चाहें तो मुआफ़ करें, चाहें तो क़िसास लें। अगर दुन्या में मुआफ़ी या क़िसास की तरकीब न बनी तो **क़ियामत** के रोज़ वुरसा अपने ह़क़ का मुत़ालबा कर सकते हैं।

सदक़ा प्यारे की ह़या का कि न ले मुझ से ह़िसाब
बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 171)

मैं ने इल्यास क़ादिरी को मुआफ़ किया : तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों से दस्त बस्ता आ़जिज़ाना अ़र्ज़ करता हूं कि

www.dawateislami.net

अगर मैं ने आप में से किसी की **ग़ीबत** की हो, **तोहमत** धरी हो, डांट पिलाई हो, किसी त़रह़ से **दिल आज़ारी** की हो मुझे मुआ़फ़ मुआ़फ़ और मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये। दुन्या का बड़े से बड़ा ह़क़्क़ुल अ़ब्द जो तसव्वुर किया जा सकता है फ़र्ज़ कीजिये कि वोह मैं ने आप का तलफ़ कर दिया है वोह भी और छोटे से छोटा ह़क़ जो ज़ाएअ़ किया हो उसे भी मुआ़फ़ कर दीजिये और सवाबे अ़ज़ीम के ह़क़दार बनिये। हाथ बांध कर **मदनी इल्तिजा** है कि कम अज़ कम एक बार दिल की गहराई के साथ कह दीजिये : ''मैं ने **अल्लाह** पाक के लिये मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी को मुआ़फ़ किया।''

क़र्ज़ ख़्वाहों से मदनी इल्तिजा : जिस का मुझ पर क़र्ज़ आता हो या मैं ने कोई चीज़ आ़रियतन ली हो और वापस न लौटाई हो तो वोह दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के किसी भी रुक्न से रुजूअ़ करे, अगर वुसूल करना नहीं चाहता तो **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये मुआ़फ़ी की भीक से नवाज़ कर सवाबे आख़िरत का ह़क़दार बने। जो लोग मेरे मक़्रूज़ हैं, उन को मैं ने अपने तमाम ज़ाती क़र्ज़े मुआ़फ़ किये। या इलाही !

तू बे ह़िसाब बख़्श कि हैं बे ह़िसाब जुर्म देता हूं वासित़ा तुझे शाहे ह़िजाज़ का

(ज़ौक़े ना'त, स. 11)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَى اللهِ! اَسْتَغْفِرُ اللهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दिल का दर्द दूर हो गया : ग़ीबत करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **मदनी इन्आ़मात** के मुताबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। आप की तरग़ीब के लिये एक **मदनी बहार** पेशे ख़िदमत है चुनान्चे एक इस्लामी भाई को अचानक **दिल में दर्द** हुवा। जब दवाओं से फ़ाएदा न हुवा तो उन्हों ने बाबुल मदीना आ कर अस्पताल में दिल का ऑपरेशन करवाया। मगर तक्लीफ़ ख़त्म होने के बजाए मज़ीद बढ़ गई, दर्द की बे शुमार दवाएं इस्ति'माल कीं, लेकिन फ़ाएदा न हुवा। आख़िरे कार एक इस्लामी भाई की **इन्फ़िरादी कोशिश** के नतीजे में **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िले** में सुन्नतों भरे सफ़र पर रवाना हो गए। **मदनी क़ाफ़िले** में किसी क़िस्म की दवा इस्ति'माल की न ही परहेज़ी की सूरत बनी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه उस **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की बरकत से **अल्लाह** पाक ने उन का दर्द दूर फ़रमा दिया।

दिल में गर दर्द हो, डर से रुख़ ज़र्द हो — पाओगे फ़रहतें, क़ाफ़िले में चलो
ऑपरेशन टलें, और शिफ़ाएं मिलें — कर के हिम्मत चलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب — صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दिल का बातिनी मरज़ बाइसे हलाकत है : ऐ आशिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! **मदनी क़ाफ़िले** की भी कैसी कैसी बरकतें हैं ! मदनी क़ाफ़िले की बरकत से दिल का ज़ाहिरी दर्द दूर हो गया, बातिनी अमराज़ वालों के اِنْ شَآءَاللّٰه दिल का बातिनी मरज़ भी **मदनी क़ाफ़िले** की बरकत से दूर होगा। **ख़ुदा की क़सम !** ज़ाहिरी दर्द के मुक़ाबले में दिल का बातिनी मरज़ करोड़ों दरजे ख़तरनाक है। बल्कि दोनों में मुमासलत की कोई सूरत ही नहीं। दिल का ज़ाहिरी दर्द **सब्र** करने वाले के लिये सबबे दुख़ूले **जन्नत** है जब कि दिल का बातिनी मरज़ दुन्या व आख़िरत में बाइसे हलाकत है। बातिनी मरज़ को इस रिवायत से समझने की कोशिश फ़रमाइये चुनान्चे

दिल का सियाह नुक़्ता : **आशिक़ाने रसूल** की मदनी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के मक्तबतुल मदीना की किताब, **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** जिल्द अव्वल (1548 सफ़हात) सफ़हा 920 ता 921 पर है : हदीसे मुबारक में आता है : जब कोई इन्सान गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक़्ता बन जाता है, जब दूसरी बार गुनाह करता है तो दूसरा सियाह नुक़्ता बनता है यहां तक कि उस का दिल सियाह हो जाता है। नतीजतन भलाई की बात उस के दिल पर असर अन्दाज़ नहीं होती।

(تفسیر دُرِّ مَنثور ج۸ص٤٤٦)

नसीहत का असर न होने की वज्ह : **अब** ज़ाहिर है कि जिस का दिल ही ज़ंग आलूद और सियाह हो चुका हो उस पर भलाई की बात और नसीहत कहां असर करेगी ! ऐसे इन्सान का गुनाहों से बाज़ व बेज़ार रहना निहायत ही दुश्वार हो जाता है, उस का दिल नेकी की तरफ़ माइल ही नहीं होता, अगर वोह नेकी की तरफ़ आ भी गया तो बसा अवक़ात उस का जी

www.dawateislami.net

इसी सियाही के सबब नेकी में नहीं लगता और वोह सुन्नतों भरे मदनी माह़ोल से भागने ही की तदबीरें सोचता है। उस का नफ़्स उसे लम्बी उम्मीदें दिलाता, ग़फ़्लत उसे घेर लेती और वोह बद नसीब सुन्नतों भरे मदनी माह़ोल से दूर जा पड़ता है।

गुनाहों ने मेरी कमर तोड़ डाली — मेरा ह़श्र में होगा क्या या इलाही
बना दे मुझे नेक नेकों का सदक़ा — गुनाहों से हर दम बचा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 105)

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللهِ! اَسْتَغْفِرُ اللهَ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

ज़बान का ग़लत़ इस्ति'माल क़ब्र में फंसा सकता है : ऐ **आ़शिक़ाने रसूल !** **अल्लाह** पाक की ख़ुफ़्या तदबीर किस के बारे में क्या है कोई नहीं जानता वोह चाहे तो सग़ीरा गुनाह पर पकड़ फ़रमा ले और चाहे तो ढेरों गुनाह भी मुआ़फ़ फ़रमा दे और चाहे तो किसी एक अच्छे अ़मल के सबब अपने दामने रह़मत में ले ले चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने अपने मर्ह़ूम पड़ोसी को ख़्वाब में देख कर पूछा, مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ या'नी **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? वोह बोला : मैं सख़्त होल नाकियों से दो चार हुवा, **मुन्कर नकीर** के सुवालात के जवाबात भी मुझ से नहीं बन पड़ रहे थे, मैं ने दिल में ख़याल किया कि शायद मेरा ख़ातिमा ईमान पर नहीं हुवा ! इतने में आवाज़ आई : "**दुन्या में ज़बान**

www.dawateislami.net

के ग़ैर ज़रूरी इस्ति'माल की वज्ह से तुझे येह सज़ा दी जा रही है।'' अब अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते मेरी त़रफ़ बढ़े। इतने में एक साहिब जो हुस्नो जमाल के पैकर और मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र थे वोह मेरे और अ़ज़ाब के दरमियान ह़ाइल हो गए। और उन्हों ने मुझे **मुन्कर नकीर** के सुवालात के जवाबात याद दिला दिये और मैं ने उसी त़रह़ जवाबात दे दिये, اَلْحَمْدُ لِلّٰه अ़ज़ाब मुझ से दूर हुवा। मैं ने उन बुज़ुर्ग से अ़र्ज़ की : **अल्लाह** पाक आप पर रह़्म फ़रमाए आप कौन हैं ? फ़रमाया : **''तेरे कसरत के साथ दुरूद शरीफ़ पढ़ने की बरकत से मैं पैदा हुवा हूं और मुझे हर मुसीबत के वक़्त तेरी इमदाद पर मामूर किया गया है।''** (اَلْقَوْلُ الْبَدِيع ص ٢٦٠)

आप का नामे नामी ऐ सल्ले अ़ला

हर जगह हर मुसीबत में काम आ गया

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

क़ब्र में आक़ा क्यूं नहीं आ सकते ! : سُبْحٰنَ اللّٰه ! कस्रते दुरूद शरीफ़ की बरकत से **मदद** करने के लिये क़ब्र में जब **फ़िरिश्ता** आ सकता है तो तमाम फ़िरिश्तों के भी आक़ा मक्की मदनी **मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم करम क्यूं नहीं फ़रमा सकते ! किसी ने बिल्कुल बजा तो फ़रियाद की है :

मैं गोर अंधेरी में घबराऊंगा जब तन्हा इमदाद मेरी करने आ जाना मेरे आक़ा

रोशन मेरी तुरबत को लिल्लाह शहा करना जब नज़्अ़ का वक़्त आए दीदार अ़त़ा करना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

पुल सिरात़ पर रोक दिया जाएगा : सरकारे दो जहान, मदीने के सुल्त़ान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जो शख़्स

www.dawateislami.net

मुसल्मान पर कोई बात कहे उस से मक़्सूद **ऐ़ब** लगाना हो, **अल्लाह** पाक उस को **पुल सिरात़ पर रोकेगा** जब तक उस चीज़ से न निकले जो उस ने कही। (سُنَنِ ابوداؤد ج٤ ص٣٥٤ حديث ٤٨٨٣)

पुल सिरात़ से गुज़रने वालों के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! किसी पर ऐ़ब लगाना कितनी ख़त़रनाक बात है ! तलवार की धार से तेज़ बाल से बारीक जहन्नम पर बने हुए **पुल सिरात़** पर रोक दिया जाना, ख़ुदा की क़सम ! बहुत बड़ी सज़ा है। **पुल सिरात़** के मुतअ़ल्लिक़ एक ह़दीसे पाक मुलाह़ज़ा हो चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا से मरवी है, मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज, मह़बूबे रब्बे बे नियाज़ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जहन्नम पर एक पुल है जो बाल से ज़ियादा बारीक और तलवार से तेज़ तर है, उस पर लोहे के आंकड़े (या'नी हुक) और कांटे हैं जो कि उसे पकड़ेंगे जिसे **अल्लाह** पाक चाहेगा। लोग उस पर गुज़रेंगे, बा'ज़ पलक झपक्ने की त़रह़, बा'ज़ बिजली की त़रह़, बा'ज़ हवा की त़रह़, बा'ज़ बेहतरीन और अच्छे घोड़ों और ऊंटों की त़रह़ (गुज़रेंगे) और फ़िरिश्ते कहते होंगे : ''رَبِّ سَلِّمْ، رَبِّ سَلِّمْ'' ऐ परवर्द गार सलामती से गुज़ार, ऐ परवर्द गार सलामती से गुज़ार। बा'ज़ मुसल्मान नजात पाएंगे, बा'ज़ ज़ख़्मी होंगे, बा'ज़ औंधे होंगे, बा'ज़ मुंह के बल **जहन्नम** में गिर पड़ेंगे। (مُسندِ اِمام احمد ج٩ ص٤١٥ حديث٢٤٨٤٧) तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **आ़शिक़ाने रसूल** की मदनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मक्तबतुल मदीना के रिसाले ''**पुल सिरात़ की दहशत**'' (36 सफ़ह़ात) का ज़रूर मुत़ालआ़ फ़रमाइये बल्कि अपने अ़ज़ीज़ों के ईसाले सवाब के लिये तक़्सीम फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

या इलाही जब चलूं तारीक राहे पुल सिरात़ आफ़्ताबे हाशिमी नूरुल हुदा का साथ हो
या इलाही जब सरे शमशीर पर चलना पड़े रब्बे सल्लिम कहने वाले ग़मज़ुदा[1] का साथ हो
या इलाही ! नामए आ'माल जब खुलने लगें
ऐ़ब पोशे ख़ल्क़ सत्तारे ख़त़ा का साथ हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 133)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى اللهِ ! اَسْتَغْفِرُ اللهَ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

किसी की तक्लीफ़ देख कर ख़ुश न हों : **अल्लाह** पाक के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : अपने भाई की **शमातत** न कर (या'नी उस की मुसीबत पर इ़ज़्हारे मसर्रत न कर) कि **अल्लाह** पाक उस पर रह़म करेगा और तुझे उस में मुब्तला कर देगा। (سُنَنِ ترمذی ج٤ ص٢٢٧ حدیث٢٥١٤)

किसी की मुसीबत पर ख़ुश होने की मिसालें : **ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! शमातत** या'नी मुसल्मान की तक्लीफ़ पर ख़ुशी के इ़ज़्हार से परहेज़ कीजिये। अगर किसी मुसल्मान की मुसीबत पर दिल में ख़ुद बख़ुद ख़ुशी पैदा हुई तो इस का क़ुसूर नहीं ताहम इस ख़ुशी को दिल से निकालने की भरपूर सई करे अगर ख़ुशी का इ़ज़्हार करेगा तो **शमातत** का मुरतकिब होगा। आज कल **शमातत** के नज़्ज़ारे आ़म हैं। एक त़ालिबे इ़ल्म पढ़ाई में कमज़ोर हो जाए, इम्तिह़ान में नाकाम हो जाए तो

1. ग़मज़ुदा या'नी ग़म दूर करने वाला।

www.dawateislami.net

बा'ज़ अवक़ात दूसरा त़ालिबे इल्म ख़ुश हो जाता है। इसी त़रह़ किसी बड़े ना'त ख़्वान की आवाज़ बैठ जाए तो कभी छोटा ना'त ख़्वान राज़ी होता है, यूं ही क़ुर्रा (या'नी क़ारी साहिबान) **मुबल्लिग़ीन**, मुक़र्ररीन, कारीगरों, दुकानदारों, कारख़ाने दारों वग़ैरा वग़ैरा के दिल में आज कल अक्सर एक दूसरे के ख़िलाफ़ "शमातत" का मज़्मूम जज़्बा दाख़िल हो जाता है। अगर आपस में नाराज़ी हो जाए फिर तो **शमातत** की आफ़त ब आसानी फ़रीक़ैन के दिलों में दाख़िल हो जाती है। इस के बा'द ज़ेह्न येह बन जाता है मसलन जिस से नाराज़ी होती है अगर वोह या उस का बच्चा बीमार हो जाए, उस के यहां डाका पड़ जाए, माल चोरी हो जाए, कारोबार ठप हो जाए, घर ढे (या'नी गिर) पड़े, ह़ादिसा हो जाए, मुक़द्दमा क़ाइम हो जाए, पोलीस गिरिफ़्तार कर ले, गाड़ी का नुक़्सान या चालान हो जाए, अल ग़रज़ किसी क़िस्म की भी मुसीबत आए इस पर बा'ज़ लोग ख़ुशी का इज़्हार कर के **शमातत** की आफ़त में जा पड़ते हैं बल्कि बा'ज़ जो कि ज़रूरत से ज़ियादा बातूनी और बे अ़मल होने के बा वुजूद अपने आप को "पहुंचा हुवा" समझ बैठते हैं वोह तो यहां तक बोल पड़ते हैं कि देखा ! हम को सताया तो उस के साथ "ऐसा" हो गया ! गोया वोह छुपी बातों और सर बस्ता (या'नी ख़ुफ़्या) राज़ों के जानने वाले हैं और आं बदौलत (या'नी इन) को अपने मुख़ालिफ़ पर आने वाली मुसीबत के अस्बाब मा'लूम हो जाते हैं, ऐसे लोगों को डर जाना चाहिये कि ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **एह़याउल उ़लूम** जिल्द अव्वल **सफ़ह़ा** 171 पर फ़रमाते हैं : **कहा गया है कि कुछ गुनाह ऐसे हैं जिन की सज़ा "बुरा**

www.dawateislami.net

ख़ातिमा'' है हम इस से अल्लाह पाक की पनाह चाहते हैं। येह गुनाह ''विलायत और करामत का झूटा दा'वा करना है।''

मदनी ! गुनाह की आ़दतें नहीं जातीं आप ही कुछ करें

मैं ने कोशिशें कीं बहुत मगर मेरी ह़ालत आह ! बुरी रही

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 395)

तीन काम नहीं कर सकते तो यूं कर लो : एक दाना का क़ौल है कि अगर तीन काम करने से आ़जिज़ हो तो फिर तीन काम यूं कर लो (1) अगर भलाई नहीं कर सकते तो बुराई से भी रुक जाओ (2) अगर लोगों को नफ़्अ़ नहीं दे सकते तो तक्लीफ़ भी मत दो (3) अगर नफ़्ली रोज़ा नहीं रख सकते तो (ग़ीबत कर के) लोगों का गोश्त भी मत खाओ। (تَنبِيهُ الْغافِلين ص٨٩)

मुसल्मान की इ़ज़्ज़त बुज़ुर्गों की नज़र में : एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''हम ने अस्लाफ़ (या'नी गुज़श्ता बुज़ुर्गों) को देखा कि वोह ह़ज़रात लोगों की बे इ़ज़्ज़ती करने से बचने को नमाज़ रोज़े से बढ़ कर इ़बादत तसव्वुर किया करते थे।'' (ذَمُّ الْغِيبَة لِابْنِ اَبِى الدُّنْيا ص٩٤ رقم٥٥)

दुन्या जहान की दौलत एक त़रफ़ और ग़ीबत एक त़रफ़ : ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब मक्की رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : दुन्या की आफ़रीनिश (या'नी पैदाइश) से ले कर फ़ना होने तक की तमाम दुन्यवी ने'मतें भी बिलफ़र्ज़ मेरे पास हों और मैं उन्हें राहे ख़ुदा में लुटा दूं तब भी इतने बड़े अ़ज़ीम सवाब के काम के मुक़ाबले में बेहतर येह समझता हूं कि **ग़ीबत** छोड़ दूं। इसी त़रह़ दुन्या और इस की तमाम ने'मतों को **अल्लाह पाक** की राह में लुटाने से बेहतर समझता हूं कि **अल्लाह** पाक की ह़राम कर्दा अश्या की जानिब मेरी नज़र न उठे। इस के बा'द पारह 26 **सूरतुल**

www.dawateislami.net

हुजुरात की आयत नम्बर 12 का येह हिस्सा तिलावत किया :

لَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ (پ۲۶،الحجرات:۱۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : एक दूसरे की **ग़ीबत** न करो।

और पारह 18 **सूरतुन्नूर** की आयत नम्बर 30 का येह हिस्सा तिलावत किया :

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ (پارہ ۱۸ النور ۳۰)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मुसल्मान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें।

(تَنبِيهُ الغافِلين ص۸۹)

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! देखा आप ने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم **ग़ीबत** वग़ैरा गुनाहों से किस क़दर नफ़रत करते थे, वोह ह़ज़रात जानते थे कि **अल्लाह** करीम की नाराज़ी से बढ़ कर कोई नुक़्सान मुतसव्वर ही नहीं, अगर किसी एक गुनाह पर ही आख़िरत में पकड़ हो गई तो ख़ुदा की क़सम ! सख़्त रुस्वाई का सामना होगा और अगर ज़िन्दगी में एक ही बार **ग़ीबत** की और मुग़्ताब (या'नी जिस की ग़ीबत की गई उस) को मा'लूम हो गया और उस से मुआ़फ़ करवाना रह गया और उस पर बरोज़े क़ियामत गिरिफ़्त कर ली गई तो न जाने क्या बनेगा ! आह ! हुक़ूक़ुल इबाद का मुआ़मला बहुत सख़्त है।

हरनिया के दर्द का ख़ातिमा : ग़ीबत करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये ज़िक्रुल्लाह की कसरत का जज़्बा बढ़ाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में

www.dawateislami.net

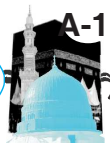

आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **मदनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه इस से दीनो दुन्या की ढेरों भलाइयां हाथ आएंगी और रब्बे करीम ने चाहा तो बीमारियों से भी शिफ़ाएं मिलेंगी। इस ज़िम्न में एक **मदनी बहार** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे एक इस्लामी भाई का **हरनिया का ऑपरेशन** हुवा था लेकिन 12 माह गुज़र जाने के बा वुजूद तक्लीफ़ ब दस्तूर बाक़ी थी, कई डॉक्टरों को दिखाया और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की दवाएं इस्ति'माल कीं, मगर फ़ाएदा न हुवा। एक दिन एक इस्लामी भाई ने **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की दा'वत दी तो उन्हों ने अपनी तक्लीफ़ का उ़ज़्र दिया, मगर उस इस्लामी भाई ने उन पर काफ़ी **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के उन्हें **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र के लिये तय्यार कर ही लिया और वोह आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** ह़ाज़िर हो गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन्हों ने तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की, उन का **हरनिया का वोह दर्द जो किसी दवा को जवाब नहीं दे रहा था** اَلْحَمْدُ لِلّٰه **मदनी क़ाफ़िले के दौरान ही ख़त्म हो गया।**

हरनिया का हो दर्द इस से हो रंग ज़र्द — मत डरें चल पड़ें, क़ाफ़िले में चलो
रह़मतें लूटने बरकतें लूटने — आइये ना ! चलें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

बीमारी की फ़ज़ीलत : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! हरनिया का दर्द जो किसी दवा से न जाता था **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की बरकत से चला गया। देखिये शिफ़ा मिन जानिबिल्लाह या'नी शिफ़ा **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से मिलती है, बिल्फ़र्ज़ किसी का **मदनी क़ाफ़िले** में दर्द न भी जाए और बीमारी दूर न भी हो तब भी दिल बरदाश्ता नहीं होना चाहिये, बीमारी के फ़ज़ाइल पर नज़र रखते हुए **अल्लाह** पाक की रिज़ा पर राज़ी रहना चाहिये। चुनान्चे **आ़शिक़ाने रसूल** की मदनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, **"बहारे शरीअ़त"** जिल्द अव्वल (1250 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 802 पर है : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बीमारियों का ज़िक्र फ़रमाया और फ़रमाया कि **मोमिन** जब बीमार हो फिर अच्छा हो जाए, उस की बीमारी **गुनाहों से कफ़्फ़ारा** हो जाती है और आयिन्दा के लिये नसीह़त और **मुनाफ़िक़** जब बीमार हुवा फिर अच्छा हुवा, उस की मिसाल **ऊंट** की है कि मालिक ने उसे बांधा फिर खोल दिया तो न उसे येह मा'लूम कि क्यूं बांधा, न येह कि क्यूं खोला ! एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** ! (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) बीमारी क्या चीज़ है, मैं तो कभी बीमार न हुवा ? फ़रमाया : हमारे पास से उठ जा कि तू हम में से नहीं। (سُنَنِ ابوداؤد ج۳ص۲۴۵ حدیث ۳۰۸۹)

मैं अपने ख़ैरुल वरा के सदक़े, मैं उन की शाने अ़त़ा के सदक़े
भरा है ऐबों से मेरा दामन, हुज़ूर फिर भी निभा रहे हैं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَى اللهِ ! اَسْتَغْفِرُ اللهَ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

एक तिन्के ने जन्नत से रोक दिया : आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** के रिसाले, "**ज़ुल्म का अन्जाम**" सफ़ह़ा 11 ता 13 पर ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की किताब "**तम्बीहुल मुग़्तर्रीन**" के ह़वाले से नक़्ल किया गया है : **मश्हूर** ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : एक इस्राईली शख़्स ने अपने पिछले तमाम गुनाहों से तौबा की, सत्तर साल तक लगातार इस त़रह़ बन्दगी करता रहा कि दिन को रोज़ा रखता और रात को जाग कर इ़बादत करता, न कोई उ़म्दा गिज़ा खाता न किसी साए के नीचे आराम करता। उस के इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : "**अल्लाह** करीम ने मेरा ह़िसाब लिया, फिर सारे गुनाह बख़्श दिये मगर **एक लकड़ी** जिस से मैं ने उस के मालिक की इजाज़त के बिग़ैर **दांतों में ख़िलाल** कर लिया था (और येह मुआ़मला हुक़ूकु़ल इ़बाद का था) और वोह मुआ़फ़ करवाना रह गया था उस की वज्ह से मैं अब तक जन्नत से रोक दिया गया हूं।" (تَنبِیهُ الْمُغتَرِّین ص ۵۱)

गेहूं का दाना तोड़ने का उख़्रवी नुक़्सान : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ज़रा ग़ौर तो कीजिये ! एक तिन्का जन्नत में दाख़िले से मानेअ़ (या'नी रुकावट) हो गया ! और अब मा'मूली लकड़ी के ख़िलाल की तो बात ही कहां है। बा'ज़ लोग दूसरों के लाखों बल्कि करोड़ों रुपै हड़प कर जाते हैं और डकार तक नहीं लेते। **अल्लाह** पाक हिदायत इनायत

फ़रमाए। आमीन। एक और इ़ब्रत नाक हि़कायत मुलाह़ज़ा फ़रमाइये जिस में सिर्फ़ एक गेहूं के दाने के बिला इजाज़त खाने के नहीं सिर्फ़ तोड़ डालने के उख़्रवी नुक़्सान का तज़्किरा है। चुनान्चे मन्क़ूल है कि एक शख़्स को बा'दे वफ़ात किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ या'नी **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहा : **अल्लाह** पाक ने मुझे बख़्श दिया, लेकिन हि़सा़बो किताब हुवा यहां तक कि उस दिन के बारे में भी मुझ से पूछगछ हुई जिस रोज़ मैं रोज़े से था और अपने एक दोस्त की दुकान पर बैठा हुवा था जब इफ़्तार का वक़्त हुवा तो मैं ने गेहूं की एक बोरी में से गेहूं का एक दाना उठा लिया और उस को तोड़ कर खाना ही चाहता था कि एक दम मुझे एह़सास हुवा कि येह दाना मेरा नहीं, चुनान्चे मैं ने उसे जहां से उठाया था फ़ौरन उसी जगह डाल दिया। और उस का भी हि़साब लिया गया यहां तक कि उस पराए **गेहूं के तोड़े जाने के नुक़्सान के ब क़द्र मेरी नेकियां मुझ से ली गईं।** (مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيح ج ۸ ص ۸۱۱ تحت الحديث ۵۰۸۳)

हम डूबने ही को थे कि आक़ा की मदद ने — गिर्दाब से खींचा हमें तूफ़ां से निकाला
लाखों तेरे सदक़े में कहेंगे दमे महशर — ज़िन्दां[1] से निकाला हमें ज़िन्दां से निकाला

(ज़ौक़े ना'त, स. 40, 41)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى اللهِ! اَسْتَغْفِرُ اللهَ
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1. ज़िन्दां : या'नी क़ैद ख़ाना

www.dawateislami.net

काश बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो जाए !!!

उम्मुल मुअ'मिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की, **या रसूल** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या आप की उम्मत में से कोई बिला ह़िसाब भी जन्नत में जाएगा ? तो फ़रमाया, हां ! वोह शख़्स जो अपने गुनाहों को याद कर के रोए । (احیاء العلوم ج ۱ ص ۴۷۹)

अल्लाह

अल्लाह पाक की हर ने'मत का शुक्र अदा करना चाहिये, इ़बादत की तौफ़ीक़ मिलना भी अ़ज़ीम ने'मत है । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ हर नमाज़ के बा'द याद आने पर **अल्लाह** पाक का शुक्र अदा करने की मुझे सआ़दत मिलती है ।

शुक्रे ने'मत की निय्यत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहना भी ''अदाए शुक्र'' है ।

– असल मोहर –

9 रबीउ़ल आख़िर 1440 हि.

17-12-18

(मदनी फूल लिखने की सआ़दत मिली इस ने'मत पर भी ब तौरे अदाए शुक्र कहता हूं : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ)